International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 234-235

वर्तमान स्कूल शिक्षा प्रणाली व बदलता प्रारूप

सतरूप ढांडा

सहायक प्रवक्ता, सी.आर.कॉलेज ऑफ एजुकेशन, हिसार, हरयाणा, भारत।

प्रस्तावना

शिक्षा का सरकारी सिस्टम जैसे जाम हो गया है। हमने जानने की कोशिश की कि क्या ग्रामीण बच्चे स्कूल जाते हैं, क्या वे वे प्राथमिक स्तर पर लिख व पढ़ पाते हैं, क्या वे जोड़–घटा कर सकते हैं। सर्वे में 15 हजार सरकारी स्कूलों की दी गई भेंट पर आधारित जमीनी रिपोर्ट भी है। शुरूआत अच्छी खबर से होती है कि स्कूलों में नामांकन का स्तर 96 फीसदी तक है अर्थात् ज्यादातर बच्चे स्कूल जाने लगे हैं। बेशक वहां शिक्षा का स्तर क्या है यह बिलकुल अलग कहानी है। लेकिन दोपहर के भोजन की योजना (85 फीसदी से ज्यादा स्कूलों में) और आधारभूत ढांचे में ऊपरी स्तर पर सुधार नजर आता है। करीब 75 फीसदी ग्रामीण स्कूलों में पीने का पानी व 65 फीसदी स्कूलों में शौचालय है। यह पांच साल की तुलना में अहम् सुधार है।

भारत का भविष्य बहुत हद तक शिक्षा के भविष्य पर निर्भर करता है। अगर हम वर्तमान शिक्षा प्रणाली को बेहतर नहीं बना पाए तो आज जिस युवा जनशक्ति के बारे में बात करते हैं वह न सिर्फ मरीचिका बनकर रह जाएगी बल्कि भविष्य के लिए भी नुकसानदायी साबित होगी। हालांकि स्कूलों में पढ़ाई को लेकर सबसे बड़ी समस्या यह है कि धरातल पर उसका कितना असर नजर आता है व उससे विद्यार्थी जीवन में क्या बदलाव आते हैं तथा यह बदलाव सामाजिक परिवर्तन का कारक कैसे बनता है। इसका सीधा संबंध स्कूल कि शिक्षा प्रणाली से है। इस संबंध में सरकारी स्कूलों से कुछ आश्चर्यजनक तथ्य सामने आये हैं जो निम्नलिखित हैः–

1. सरकारी स्कूल के पांचवी कक्षा के आधे बच्चे सरल हिन्दी या उनकी प्रादेशिक भाषा के वाक्य नहीं पढ़ पाते हैं, जो उनको स्कूल की दूसरी कक्षा में सिखाये जाते हैं।
2. कक्षा पांचवी के आधे या उससे ज्यादा बच्चे गणित में दो अंको वाला जोड़–घटा नहीं कर पाते, जो उनको छोटी कक्षाओं में सिखाया जाता है।
3. कक्षा आठवीं के आधे बच्चे साधारण भाग भी नहीं कर पाते, जो उनको कक्षा पांचवीं में सिखाया जाता है।

प्राथमिक शिक्षा का स्तर

सरकारी स्कूल में छह साल बिताने के बाद भी हमारे स्कूली बच्चे सामान्य वाक्य नहीं पढ़ सकते व साधारण जोड़–घटा नहीं कर पाते। यहीं बच्चे यदि शहर के किसी निजी स्कूल में पढ़ने जाते तो ये सारी बातें दो–तीन साल में ही सिख जाते। स्कूल में इतने साल जाने पर भी अगर विद्यार्थी साधारण वाक्य नहीं पढ़ पाता व छोटे–मोटे सवाल हल नहीं कर पाता तो आगे की शिक्षा की सारी किताबें उनके लिए व्यर्थ साबित होगी। प्राथमिक शिक्षा बच्चे के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। जहां वह चीजों को अपने मन से समझने की कोशिश करता है व उस शिक्षा का अपने व्यवहारिक जीवन में प्रयोग करता है। प्राथमिक शिक्षा बच्चे के जीवन का आधार है। जिसे सफलतापूर्वक पूरा किए बिना वह अपने अच्छे सामाजिक जीवन की कल्पना नहीं कर सकता।

ग्रामीण स्कूलों की कार्य प्रणाली

गांव के सरकारी स्कूलों में किस तरह की शिक्षा प्रदान की जा रही है। क्या हम स्कूलों में बच्चों का दाखिला और मध्याह्न भोजन के आंकडों को ही शिक्षा की सफलता मान रहे हैं और स्कूलों में शिक्षा की गुणवता को भूल गए हैं। क्या सिर्फ खुद का नाम लिख लेना व न्यूनतम् स्तर पर पढ़ने और गणित के सामान्य सवालों को हल करने की योग्यता को ही शिक्षा मान लिया जाना चाहिए। यह सही है सामान्य शब्दों को पढ़ने व गणित की सामान्य जानकारी इसलिए महत्वपूर्ण है कि बाद के वर्षों में कोई इसे सिख नहीं पाता। कम से कम ऐसी योग्यता से रहित छात्र को लगातार शिक्षा में कई वर्ष गुजारना समय की बरबादी ही होगा। आंकड़ों के विशेषण से यह भी पता चलता है कि यदि आधारभूत कौशल शुरूआत में ही अच्छी तरह नहीं सिख लिया जाता तो बाद में उन्हें नहीं सिखा जा सकता। ऐसे छात्र जीवन में हमेशा फिसड्डी ही साबित होंगे। ये हमारी शिक्षा व्यवस्था में मंडराते रहेंगे और भर्ती के आंकड़ों में इनकी गिनती होती रहेगी। लेकिन वास्तविक तौर पर ये अशिक्षित ही रहेंगे। सरकारी स्कूलों में शिक्षा व्यवस्था कि हकीकत यही है कि बहुत सारे बच्चे शिक्षण संस्था का हिस्सा बनकर भी शिक्षित नहीं हो पाए। जो हमारी शिक्षा व्यवस्था की नाकामी है। इस तरह जो बच्चे प्राथमिक व माध्यमिक तौर पर उतीर्ण नहीं हो पाए वो कैसे एक अच्छे समाज व राष्ट्र में योगदान दे सकते हैं।

यह एक ऐसी समस्या है जिसका समाधान किया जा सकता है। बशर्ते हम इसकी गम्भीरता समझें व हमारी सरकार भी इसके समाधान में सहयोग दें। खेद की बात यह है कि हमारी कथित बौद्धिक बहसें राजनीतिक और व्यक्तित्व आधारित प्रतियोगिताएं हो गई है। चूंकि इस समस्या के साथ कोई विशेष जाना पहचाना चेहरा जुड़ा हुआ नहीं है। इस कारण हम इसकी ज्यादा परवाह नहीं करते हैं और मीडिया भी इसकी उपेक्षा करता है। जबकि वास्तव में यह समाज व राष्ट्र के लिए सबसे मुख्य मुद्दा है। यदि समाज व सरकार समय रहते इस समस्या का समाधान नहीं करते हैं तो अगले एक या दो दशक में हमारे सामने लाखों भूखे और रोजगार मांगने वाले ऐसे युवा होंगे जिनके पास ना तो कोई योग्यता होगी और ना ही दुनिया के बारे में शिक्षित होने से आया कोई नजरिया होगा। अच्छे समाज व उन्नत राष्ट्र के सपने को पूरा करने के लिए हमें ग्रामीण शिक्षा में सुधार करना ही होगा। शिक्षा प्रणाली में निम्नलिखित व्यवस्थाओं के माध्यम से हम ग्रामीण शिक्षा के स्तर में परिवर्तन ला सकते हैंः–

1. **कक्षा कार्य को व्यवहारपूरक बनाकर** : प्राथमिक कक्षाओं में माध्यमिक एवं उच्च स्तर की शैक्षणिक कौशलों का उपयोग नहीं किया जा सकता। प्राथमिक कक्षाओं में अध्यापक शिक्षण कार्य को विद्यार्थी की योग्यतानुसार रूचिकर बना सकता है। जिससे विद्यार्थी कक्षा की सभी गतिविधियों में बिना किसी डर व तनाव के भागीदारी करता है तथा वह कक्षा में सभी के साथ सहयोगपूर्ण तरीके से सिखने की कोशिश करता है तथा कक्षा में छोटे बच्चे पर किसी भी तरह का शैक्षणिक दबाव नहीं

डालना चाहिए। बच्चे को जितना व्यवहारिक ज्ञान होगा उतना ही वह शिक्षा के प्रति समर्पित होगा।

2. **कौशलपूर्ण शिक्षण** : विद्यालय का काम विद्यार्थी को सिर्फ स्कूल में दाखिला देना ही नहीं होता बल्कि उसका मुख्य कार्य विद्यार्थी को कौशलपूर्ण शिक्षण प्रदान करना होता है। स्कूल को विद्यार्थियों की संख्या की जगह उनकी कौशल गुणवता पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इसके लिए किसी भी केन्द्रिकृत तकनीक का इस्तेमाल किया जा सकता है। कौशलपूर्ण शिक्षण के बाद विद्यार्थी जीवन मे उचित दृष्टिकोण के साथ जीवन के मूल्यों को ग्रहण कर पाता है।
3. **प्रोद्योगिकी का इस्तेमाल :** बदलते समय में शिक्षा प्रदान करने के तरीकों में व्यापक बदलाव समाज में स्वीकार किये गए हैं और समय के साथ तकनीक में भी बहुत बदलाव आये हैं। आज तकनीक और तकनीकी शिक्षा जीवन की जरूरत बन गई है। इस कारण से आज के युवा के पास प्रचुर मात्रा में रोजगार उपलब्ध है। इस कारण से शिक्षा के क्षेत्र में तकनीक का उचित इस्तेमाल स्कूल स्तर से ही शुरू कर देना चाहिए।
4. **पाठ्यक्रम में बदलाव :** हमारा पाठ्यक्रम व पाठ्यसामग्री बहुत पुरानी हो चुकी है और नये बदलते हुए युग में शिक्षा से उसका संबंध नजर नहीं आ रहा है। रटने की जो पद्धति हम बच्चों पर लादते हैं वह न सिर्फ उसे किसी विषय को समझने से रोकती है बल्कि समझ या तर्क के किसी कौशल को हासिल किए बिना उसे हमारी शिक्षा व्यवस्था के अगले पायदान पर ले जाती है। जो बाद में व्यक्तिगत तौर पर बच्चे के शैक्षणिक विकास में बड़ी बाधा साबित होती है।
5. **वैश्वीकरण :** आज लगातार शिक्षा के क्षेत्र में वैश्वीकरण बढ़ रहा है। इस कारण से हम स्कूली शिक्षा में बच्चों के मनोविज्ञान का सार्थक अध्ययन कर पा रहे हैं। वैश्वीकरण के द्वारा बच्चों के मनोविज्ञान में महत्वपूर्ण बदलाव देखे गए हैं। वैश्वीकरण के द्वारा स्कूली शिक्षा की व्यवस्थाओं में बहुत बदलाव हमारी शिक्षा प्रणाली में बहुत बदलाव आ रहा है।

निष्कर्ष

अगर हमें समाज व राष्ट्र की संस्कृति को बदलना है तो शिक्षा के बदलते स्वरूप को स्वीकार करना होगा व बच्चे की उसकी अभिरूचि अनुसार शिक्षा प्रदान करनी होगी। प्राथमिक शिक्षा की गुणवता का स्तर नहीं सुधारा गया तो हमारे पास अयोग्य एवं बेरोजगार युवाओं की फौज होगी व वैश्वीकरण के इस दौर में हमारा समाज और राष्ट्र पिछड़ जाएगा। अगर हम अपने समाज एवं राष्ट्र को सही दिशा में ले जाना चाहते हैं तो शिक्षा के व्यवहारिक व प्रायोगिक दृष्टिकोण को बदलना होगा। स्कूली शिक्षा को इस तरह विकसित करना होगा कि वह विद्यार्थी में आन्तरिक व मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को पैदा करे ताकि वह विद्यार्थी आगे चलकर अच्छे समाज व अच्छे राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दे सके।

सन्दर्भ ग्रंथावली

1. स्कूल की स्थिति पर भारतीय सरकार की रिपोर्ट 2013।
2. एन.जी.ओ. प्रथम के द्वारा कराया गया एक अध्ययन 2014।
3. एसर की एनुअल स्टेट्स ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट 2013।
4. स्कूल की स्थिति पर हरियाण सरकार की रिपोर्ट 2014।